जलवायु परिवर्तन - जल, जीवन और जागरूकता

अनिल कुमार लोहनी
वैज्ञानक ई-I, राजसं., रूड़की

मनुष्य इस धरती पर ईश्वर की श्रेष्ठतम रचनाओं में से एक हैं । प्रकृति में व्याप्त समस्त जीवों की तुलना में मनुष्य को ज्ञान का अतुलित भंडार मिला है । इस ज्ञान का उपयोग कर मनुष्य ने प्राचीनतम पाषाण युग से आज के औद्योगिक युग तक की यात्रा कर पृथ्वी पर वह सब साधन जुटा लिये है, जो कि शायद कभी कल्पना से परे थे । किन्तु इस प्रगति के लिये मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनो का अत्यधिक दोहन करना प्रारम्भ कर दिया । प्रकृति एवं पर्यावरण पर मनुष्य ने इतना अधिक हस्तक्षेप किया है कि पर्यावरण का रूप दिन प्रतिदिन भयावह होता गया है । अपने स्वार्थ के लिये मनुष्य ने प्रकृति के संतुलन को इतना अधिक बिगाड़ दिया है कि इसका सीधा प्रभाव जलवायु परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है । यदि मनुष्य ने समय रहते जलवायु परिवर्तन के कारणों का निवारण नहीं किया तो कहीं ऐसा न हो कि इस धारा से जीवन ही लुप्त हो जाये । मानव समाज पर मंउराते इस खतरे को ध्यान में रखते हुए दुनिया भर में निंविवाद रूप से, जलवायु परिवर्तन को वर्तमान समय की सबसे प्रमुख समस्या के रूप में देखा जा रहा है । पर्यावरणविदों तथा विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े वैज्ञानिकों के समक्ष जलवायु परिवर्तन तथा विभिन्न क्षेत्रों में इसके प्रभाव का आकलन सबसे बड़ी चुनौती है । जलवायु परिवर्तन की यह चुनौती,आजीविका के लिये संघर्षरत समान्य मनुष्य के लिये जहाँ एक चर्चा का विषय मात्र है वहीं वास्तविकता यही है कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पृथ्वी पर विद्यमान सभी जीवों का जीवन इससे प्रभावित होता है । इसी कारण दुनिया के अधिकांश देश उन कारणों को गंभभ्रता से लेने लगे हैं जो धरती के जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारक हैं ।

हमारे देश में भी जलवायु परिवर्तन की समस्या के कारणें के अध्यन और निवारण के लिये विभिन्न कार्यक्रम संचालित किये गये हैं । वैसे तो जलवायु परिवर्तन का प्रभाव जीवन के सभी क्षैत्रों में देखने को मिलता है किन्तु इस लेख में जलवायु परिवर्तन, जल और जनजीवन पर इसका मुख्य प्रभाव तथा आवश्यक जागरूकता अभियानों के विषय में चर्चा की गइ है ।

पृथ्वी के ताप कटिबन्ध क्षेत्र और जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन के विषय में चर्चा करने से पूर्व यह जानलेना अतिआवश्यक है कि पृथ्वी पर अलग-अलग स्थानों की जलवायु, ताप, आर्द्रता तथा वर्षण एक दूसरे से भिन्न हैं । इसी कारण पृथ्वी को अनेक आधारों पर अलग-अलग क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है । औसत

वार्षिक तापमान के आधार पर मोटे-तौर पर पृथ्वी को पाँच क्षेत्रों में बाँटा गया है । जैसा कि हम जानते है कि पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में सूरज की किरणें कितनी लम्बवत गिरती हैं यह उस स्थान की भूमध्य रेखा से दूरी पर निर्भर करता है । इसी कारण पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों को उनकी भूमध्य रेखा से दूरी के अनुसार निम्नलिखित पाँच ताप कटिबन्ध क्षेत्रों में बाँटा गया है ।

1. उत्तरी शीत कटिबन्ध	यह उत्तरी ध्रुवीय वृत के उत्तर का क्षेत्र है तथा उत्तरी ध्रुव इसके केन्द्र हैं ।
2. उत्तरी शीतोष्ण कटिबन्ध	यह क्षेत्र उत्तरी ध्रुवीय वृत और कर्क रेखा के बीच का क्षेत्र है ।
3. उष्ण कटिबन्ध	यह क्षेत्र कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच का क्षेत्र है ।
4. दक्षिणी शीतोष्ण कटिबन्ध	यह क्षेत्र मकर रेखा और दक्षिणी ध्रुवीय वृत के बीच का क्षेत्र है।
5. दक्षिणी शीत कटिबन्ध	यह क्षेत्र दक्षिणी ध्रुवीय वृत के दक्षिण का क्षेत्र है जिसेक केन्द्र में दक्षिण ध्रुव है ।

जल, जंगल और जमीन, इन तीनों तत्वों के बिना प्रकृति अधूरी है । कहा जाता है कि इस पृथ्वी पर सबसे समृद्ध देश वहीं है जहाँ यह तीनो प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है जलवायु में परिवर्तन अपरिहार्य है तथा पृथ्वी के विभिन्न ताप कटिबन्ध क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन सीमित गति से लगातार जारी है । औद्योगिकीरण और विकास की बढ़ती रफतार के कारण विभिन्न ताप कटिबन्ध क्षेत्रों मे जो परिवर्तन देखने में आ रहे हैं उनसे इन क्षेत्रां के समुचे परिस्थितिक तंत्र पर कहर टूट पड़ा है । यही नही इस तीव्र परिवर्तन ने इन क्षेत्रों की जीवन शैली, समाज और समुदाय को झकझोर दिया है। हिंद महासागर में 1200 द्वीपो पर फैला मालदीप एक समय में उष्णकटिबंध क्षेत्र का स्वर्ग माना जाता था वैज्ञानिक अनुमानों के अनुसार यह सुंदर देश हो सकता है अगले पचास वर्षों में पूरी तरह जलमग्न हो जाये । उष्णकटथ्बंधीय वन वायुमंडल को आक्सीजन प्रदान करने के साथ-साथ जैव विविधता को भी सुरक्षित रखते हैं । जंगल ग्लोबल वार्मिंग का प्रभव कम करने में सहायक होते है किन्तु औद्योगिकीकरण के साथ ही जंगालो की कटाई से वायुमंडल को दो प्रकार से हानि पहुँचती है- 1. कार्बन डाईआकसाइड का आक्सीजन में बदलने वाले वृक्षों की संख्या घट जाती है । 2. लकड़ी को जलाने से उसमें विद्यमान कार्बन हवा में मिल जाता है ।

जल संसाधन और जलवायु परिवर्तन

जल संसाधन जल के वह स्रोत हैं, जो मानव के लिये उपयोगी हो या जिनके उपयोग की संभवना हो । विभिन्न मानवीय उपयोगो जैसे घरेलू कार्य, कृषि, ओद्योगिक मनोरंजन एवं पर्यावरण गतिविधियों के लिये ताजे पानी की आवश्यकता होती है । पृथ्वी के पानी का 97.5 प्रतिशत खारा है जबकि केवल 2.5 प्रतिशत ही मीठा जल है । पृथ्वी पर स्थित मीठे जल का

दो-तहहाई हिस्सा हिमानी और ध्रुवीय बर्फीली टोपी के रूप में जमा है तथा शेष पिघला हुआ पानी भूमि के अन्दर, ऊपर तथा हवा में है । जनसंख्या में आतपूर्व दर से वृद्धि एवं जलवायु परिवर्तन के कारण स्वच्छ पानी की पर्याप्तता लगातार कर हो रही है । सन् 2000 में दुनिया की आबादी 6.2 अरब थी । संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के अनुसार सन 2050 तक जनसंख्या में 3 अरब की वृद्धि हो जायेगी । जनसंख्या वृद्धि के कारण जल तनाव से ग्रस्त विकासशील देशों में जल की मात्रा और बढ़ेगी । अनुमान लगाया जाता हे कि पृथ्वी का 15 प्रतिशत जल घरेलू उद्देश्य के लिये उपयोग होता है तथ घरो की बुनियादी आवश्यकताओं के लिये प्रतिदिन प्रति व्यक्ति लगभग 50 लीटर की खपत है तथा इससे बगीचों के लिये इस्तेमाल पानी शामिल नहीं है ।

मौसम और जल चक्र के बीच बहुत ही करीबी संबंधों के कारण जलवायु परिवर्तन जल संसाधनो पर महत्वपूर्ण प्रभव डाल सकता है । दुनयिभर में हुए विभिन्न अध्ययनों में यह कहा गया है कि बढ़ते तापमान के कारनण 1. वाष्पीकरण में वृद्धि होगी। 2. वर्षा में क्षेत्रीय विविधता होगी 3. ताजे पानी की आपूर्ति में वृद्धि होगी 4. सूखा एवं बाढ़ विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग मसय पर अक्सर हो सकते हैं । 5. पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फबारी और तुषार पिघलाव की संभावना है । जर्मनी के बॉन में जारी एक रिपोट्र **"इन सर्च ऑफ शेल्टर मैपिंग द इफैक्टस आफ क्लाइमेट चेंज आन हयूमेन मिटिगेशन एण्ड डिसप्लेसमेंट"** में कहा गया है कि ग्लेशियारों का पिघलना जारी है । इसके परिमस्वरूप पहले बाढ़ आयेगी और फिर लम्बे समय तक जल की आपूर्ति थम जाएगी ।

हमारे देश का बहुत बड़ा क्षेत्र बाढ की विभीषिका को लगातार झेलता आ रहा है। परन्तु विगत कुछ वर्षों से बाढ के स्वरूप, प्रवृति व आवृति मे होने वाले परिवर्तनों को जलवायु परिवर्तन के साथ जोड़कर देखा जा रहा है । ऐसा नही है कि हमारे देश के लिये बाढ कोइ नई बात है परन्तु ऐसा माना जाने लगा है कि मौसम में हो रहे बदलाव ने इस प्राकृतिक प्रक्रिया की तीव्रता व स्वरूप को बदल दिया है । मौसम बदलाव का दूसरा प्रमुख प्रभाव सूखे के रूप में देखा जा सकता है । वैज्ञानिक अनुमानों के अनुसार तापमान में वृद्धि एवं वाष्पीकरण की दर तीव्र होने के परिणाम स्वरूप सूखाग्रस्त क्षेत्र बढता जा रहा है । यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि मौसम बदलाव के चलते वर्षा समयानुसार नहीं हो रही है और उसकी मात्रा में बदलाव आया है ।

जलवायु परिवर्तन- शोध, कार्यक्रम एवं सम्मेलन

दुनिया के बढते वेश्विक तापमान और जलवायु परिवर्तन के लिये कार्बन डाई आक्साइड को ही मुख्यतः जिम्मेदार माना जा रह है । वास्तव में मानव की प्रत्येक गतिविधि के लिये

जीवाश्य ईधन जरूरी बन गया है । जीवाश्य ईधन के जलने की प्रक्रिया से उत्पन्न हाने वाली कार्बन डाईआक्साईड का स्तर वातावरण में लगातार बढ़ता जा रहा हे बाकी की कसर तेजी से घटते जंगले ने पूरी कर दी है । कार्बनडाईआक्साइड में बढोत्तरी से धरती से निकलने वाली गर्मी वातावरण से बाहर नही जा पा रही है **वेश्विक गर्माहट बढ़ते कार्बनडाईआक्साइड की मात्रा से चिंतित शिक्षित समाज ने कुछ नये शब्दो और विषयों को जन्म दिया जैसे कि ग्लोबल वार्मिंग, क्लाइमेट चेंज, कार्बन ट्रेडिंग, कार्बन फुटप्रिंटस तथ जिओ इंजीनियरिंग इत्यादि** । 1950 के दशक में जब ग्लोबल वार्मिंग जैसे शब्दो का प्राद्रुभाव नहीं हुआ था ताथा वैज्ञानिक समाज **"न्यूकिलयर विंटर"** की बात करता था उस समय हवा में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा को एक शोध छात्र चार्ल्स कीलिंग ने मापा था । हबा में कार्बन डाई आक्साइड की सांद्रता को नापने वाला उपकरण बनाकर तथा विभिन्न प्रयोगों द्वारा कीलिंग ने निष्कर्ष निकाला कि वातावरण में कार्बन डाई आक्साइड की सांद्रता लगातार परिवर्तनशील है और इसका मुख्य कारण मानवीय गतिविधियां हैं । जलवायु परिवर्तन पर आज हो रही व्यापक एवं विभिन्न चर्चाएं कीलिंग के प्रयोगो पर आधारित है । परिणामस्वरूप, जिओ इंजीनियरिंग का अत्यधिक तेजी से प्रादुर्भाव एवं विकास हुआ है । जिओ इंजीनियरिंग द्वारा यह विचार किया जा रहा है कि ऐसी तकनीक का विकास किया जाए जिससे धरती पर पहुँचने वाली सौर विकरण में कमी की जा सके । नोबल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक पॉल कर्टजन ने स्ट्रेटोस्फेरिक सल्फर इंजेक्शन का सुझाव दिया जिसमें कि वातावरण की ऊपरी परत से सल्फर डाइ आक्साइड को खुला छोड़ दिया जाता है । इस प्रक्रिया के दौरालन यह बड़ी मात्रा में माइक्रोमीटर से छोटे सल्फेट के कणों में परिवर्तित हो जाती है। वातावरण में बिखरे सल्फेट के ये अनगिनत कण सौर विकिरण की फिर से अंतरिक्ष की ओर मोड़ देते हैं ।

जलवायु परितर्वन पर हो रहे शोध के अतरिक्त विभिन्न कार्यक्रम तथा सम्मेलन लगातार किये जा रहे हैं । बहुत सी पुस्तके लिखी गई तथा फिल्मों के माध्यम से जन जाग्रति लाने का प्रयास जारी है । इनमें से कुछ का वर्णन नीचे दिया गया है ।

- **"एन इनक्कवीनिंयेट ट्रथ"** जलवायु परिवर्तन की भयावहता को दर्शती इस फिल्म में अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति अलगोर ने भूमिका निभई थी ।
- **"स्टेट आफ फीयर"** माइकल क्रस्टन ने अपनी इस पुस्तक मे जलवायु विज्ञान से संबंधित शोध कार्यों और उसमें सेलग्न वैज्ञानिकों को जमकर आड़े हाथो लिया है ।
- **"लाइव अर्थ" संगीत कार्यक्रम** - अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति अलगोर के संगठन "सेव अवरसेल्फस" के तत्वाधान में 7 जुलाई, 2007 को यह संगीत कार्यक्रम पर्यावरण को लेकर जागृति पैदा करने के मकसद से किया गया ।

- **"जलवायु परिवर्तन से सामनाः अविभाजति विश्व में मानव एकता"** राष्ट्र संघ विकास कार्यक्रम की इस रिपोर्ट में एक अध्याय है "खतरनाक जलवायु परिवर्तन से बचावः असर को कम करने की रणनीति" **इस अध्याय की शुरूआत गाँधी जी के एक उदहारण से की गई है "अगर आप गलत दिशा में जा रहे हैं तो रफतार बेमानी हो जाती है"** ।
- **"इन सर्च आफ शेल्टर मेपिंग इफेक्ट्स आफ क्लाइमेट चंज आन हयूमेन मिटिगेशन एण्ड डिस्प्लेसमेंट"** कोको वार्नर तथा एलेक्स सेरबिनि द्वारा तैयार इस रिपोर्ट में जलवायु संबंधी पलायन के बारे में चर्चा की गई है । यह रिपोर्ट विस्तार से जलवायु परिवर्तन के कारण स्थानीय वातावरण में हाने वाले बदलाव के कारण मनुष्यों का अधिक हरियाले वाले क्षेत्रों के पलायन के बारे में जानकारी देती है ।
- **"लिविंग प्लेनेट रिपोर्ट-2006"** इस रिपोर्ट में कहा गया है कि विकसित एवं विकासशील राष्ट्रो में प्रकृति को बेतहाशा दुहा है । हमने दोहन एवं दमन तो किया है किन्तु प्राकृतिक धरोहर को संरक्षित करने की दिशा में कोई सार्थक प्रयास नहीं किया ।
- **इंटरर्गवमेटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आई पी सी सी) रिपोर्ट** - आई पी सी सी ने 17 नवम्बर को स्पेन के वैलेशिया में जारी अपनी चौथी और अंतिम रिपोर्ट में कड़ी चेतावनी देते हुए कहा है कि ग्लोबल वार्मिंग की क्षतिपूर्ति नहीं हो पाएगी । आई पी सी सी विभथ्न देशों के विशेषज्ञों और प्रतिनिधियों को मिलाकर बनाया गया साझा पैनल है जो संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से अपना काम इसके मौजूदा अध्यक्ष भारत के डा आर. के. पचौरी की अध्यक्षता में कर रहा है ।
- **क्योटा प्रोटोकाल या संधिः**- दिसम्बर, 1997 में जापान के क्योटा शहर में वार्ताओं का क्रम शुरू हुआ था । इसी वजह से इसे " क्योटा संधि" नाम दिया गया है । रूस द्वारा नबम्वर, 2004 में अनुमोदन के बाद इसके क्रियान्वयन का रास्ता साफ हो गया और 16 फरवरी, 2005 से इसे लागू कर दिया गया । यह संधि विश्व के ओद्योगिक देशों को 6 ग्रीनहाउस गैसों- कार्बन डाई आक्साइड, मीथेन, नइट्रस आक्साइड, सल्फर हेक्साफ्लोराइड, एच एफ सी तथ सी एफ सी में एक निश्चित सीमा तक कटौती करने को बाध्य करती है । इस संधि पर अमेरिका को छोड़ 184 देशों ने हस्ताक्षर किये हैं ।
- **संयुक्त राष्ट्र पर्यावरणप कार्यक्रम** (यू एन ई पी) ने सात अरब वृक्ष अभियान नाम से एक नई तथा अपेक्षाकृत अधिक महत्वाकाक्षी कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया है । जिसका लक्ष्य है कोपनहैगन सम्मेलन 2009 तक प्रत्येक व्यक्ति के लिये कम से कम एक वृक्ष लगाने का कार्यक्रम सम्पन्न करना ।
- **"विश्व पर्यावरण दिवस 2009 का विषय है- आपके ग्रह को जरूरत है आप कि- जलवायु परिवर्तन से लड़ने को एव हों "** इस विषय के इस बात पर जोर दिया गया

है कि सभी देशों को जलवायु के संबंध में एक होने की जरूरत है । इस वर्ष के विश्वपर्यावरण दिवस का महमान देश मैक्सीको है । मैक्सीको का चयन इसलिए किया गया कि जलवायु परिवर्तन के विरूद्ध लड़ाई में इसकी व्यवाहरिक ओर सामाजिक भूमिका बढ़ती जा रही है ।

भारत की जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना (नेशनल एक्शन प्लान फॉर क्लाईमेट चेंज)

प्रधानमंत्री मनमोन सिंह ने जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना को जुलाई 2008 को पेश किया गया । कार्ययोजना को प्रधनमंत्री की सलाहकार समिति ने तैयार किया हे । इसे प्रस्तुत करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा **"जलवायु परिवर्तन आज एक वैश्विक चुनौती है इससे वैश्विक तालमेल और सहयोग से निपटा जा सकता है । अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के एक जिम्मेदार सदस्य के रूप में भारत अपनी भूमिका निभने को तैयार है और अपना योगदान देना चाहता है"** इस योजना में इस बात पर जोर दिया गया है कि किस तरह प्राकृतिक श्रोतों का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करके पर्यावरण को प्रदूषणप मुक्त बनाया जा सकता है ।

इस कार्ययोजना में ग्रीनहाऊस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के बारे में कोई प्रावधान नहीं है क्योकि सरकार का मानना है कि भारत में ग्रीनहाऊस गैसों का उत्सर्जन अन्य विकासशील देशों की तुलना में बहुत ज्यादा नहीं हैं । योजना में सभी राज्यों से कहा गया है कि विकास संबंधी पहले के बावजूद भारत की प्रति व्यक्ति ग्रीनहाऊस गैस उत्सर्जन की दर विकसित औद्योगिक देशों के प्रति व्यक्ति उत्सर्जन से अधिक नहीं होगी ।

जलवायु में हो रहे बदलाव के मद्देनजर इस योजना का निर्माण किया गया है । योजना में 8 बातों को लागू करने की बात कही गयी है । यह योजनाऐं दीर्घकालिक और बहुद्देश्य होंगी। इसके माध्यम से जलवायु में हो रहे बदलाव से निपटने की योजना है । इस योजना में जिस 8 बिन्दुओं पर बात की गयी है वें हैं -

1. ऊर्जा के कुल इस्तेमाल में सोर ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा ।
2. ऊर्जा दक्षता के उपायों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करना ।
3. जीवों के लिए अनुकूल पर्यावरण का निर्माण ।
4. पानी के सही इस्तेमाल के लिए प्रभाकारी रणनीति ।
5. हिमालय के ग्लेशियरों की सुरक्षा ।
6. पारिस्थितिक तंत्र को बढ़ाना ।
7. कृषि को जलवायु में तेजी से हो रहे बदलाव के अनुसार लचीला बनाना
8. इस क्षेत्र में शोध के लिए स्ट्रैटेजिक नॉलेज मिशन की स्थाना करना ।

इसी को ध्यान में रखकर केन्द्रीय जलसंसाधन मंत्रालय ने जल संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन के असर को लेकर इसके गहन अध्ययन का फैसला किया है, जिसमें वर्षा की घटती बढ़ती अवधि, नदियों के बदलते प्रभाव और ग्लेशयारों के पिघलने की गति पर नजर रखखी जायेगी। **इसके लिए मंत्रालय ने एक विशोष प्रकोष्ठ का गठन किया है जिसमें केन्द्रीय जल आयोग, ब्रहमपुत्रा बोर्ड, केन्द्रीय भूजल बोर्ड व राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान को शामिल किया गया है ।** जल संसाधनो के अध्ययन में देश के जाने माने प्रमुख शिक्षण संस्थानों के विशेषज्ञों को शामिल किया जायेगा । मुख्यतः जिन संस्थानों को चिन्हित किया गया है उनमें आई आई टी, रूड़की, गुवाहाटी व खडकपुर के साथ एन आई टी, श्रीनगर पटना प्रमुख हैं । जल संसाधन मंत्रालय ने अध्ययन में अन्तर्राष्ट्रीय मानकों पर अमल करने की बात कही है । दरअसल देश की बड़ी व मझली सिंचाई परियोजनाओं की समीक्षा की जायेगी । जलवायु परिवर्तन से इन योजनाओं की घटती क्षमता को बढ़ाने के उपायों पर भी विचार होगा । इसके लिए आई आई टी, केन्द्र व राज्य स्तरीय जल व भूमि शोध संस्थान अहम भूमिका निभायेगें । बड़ी सिंचाई परियोजनाओं की संभावनाओं को खगांला जायेगा । जलसंसधन मंत्रालय ने जल संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन के अध्ययन को अपनी प्राथमिकता सूचि में सम्मिलित किया है ।

जलवायु परिवर्तन पर जन जागरूकता

आज हमे सबसे ज्यादा जरूरत है जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर आम जनता को जागरूक करने की । दिनोदिन गंभभ्र रूप लेती इस समस्या से निपटने के लिये आज आवश्यकता है एक ऐसे अभियान की जिसमें हम स्वप्रेरणा से सक्रिय भागीदारी निभायें । हम सब मिलकर इस अभियान में सहयोग दे सकते हैं जैसे किः-

- ब्रुश से दातों की सफाइ करते समय बहते पानी को रोक कर जल तथा ऊर्जा दोनो की बचत कर ऊर्जा उत्पादन के समय उत्सर्जित ग्रीन हाउस गैसों को कम कर सकते हैं । अतः जल संरक्षणप एक प्राम्कता होनी चाहिये ।
- विद्युत चलित ट्रेड मिल का इस्तेमाल करने के बजाये पार्क में चहल कदमी कर ऊर्जा की बचत करें ।
- घर के आसपास पौधा रोपण करें
- हर संभव तरीके से घर में बिजली की बचत करें तथा बिजली की जरूरतों को कम करना प्राथम्कता होनी चाहिये
- सार्वजनिक वाहनों का निजी वाहनो की तुलना में अधिक उपयोग करें ।
- वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देना चाहिये

इस प्रकार से अपने अनेक प्रयासों के द्वारा हम पृथ्वी को बचाने के अभियान में अपना योगदान दे सकते हैं । प्रकृति का रूप बदलने का सारा दोष मनुष्य के ऊपर ही जाता है अब यह मानव के हाथ में है कि वह किस प्रकार से अपनी बुद्धि और सूझबूझ का उपयोग कर अपनी इस भूल को सुधार ले । चूंकि जलवायु परिवर्तन किसी एक देश अथवा क्षेत्र तक सीमित नहीं है इसलिए इसमें कभी लाने हेतु सभी स्तरों पर ठोस उपायों की जरूरत है । अन्त में आई पी सी सी के अध्यक्ष डा. आर.के. पचौरी का यह बयान महत्वपूर्ण है जो उन्होने अन्तिम रिपोर्ट जारी करते हुए व्यक्त किया था ***"हमें अब उन मूल्यों या नैतिकता की जरूरत है जिनमें हर मानव अपनी जीवन प्रणाली व व्यवहार मे बदलाव कर उस चुनौती का सामना करने के लिये कमर कस सके जो हमारे समाने पेश आ रही है"***

*****